डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर परिसंवाद का आयोजन

विभिन्न लोगों ने साझा किए मेरे जीवन पर पुस्तकों का प्रभाव विषय पर अपने विचार

पुस्तकें हमें संवेदनशील बनाती हैं - अजीत कौर

नई दिल्ली 23 अप्रैल 2022, साहित्य अकादेमी द्वारा आज विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर मेरे जीवन पर पुस्तकों का प्रभाव विषयक एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद का उद्घाटन प्रख्यात पंजाबी लेखिका अजीत कौर ने किया। विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिष्ठित व्यक्तियों गिरीश्वर मिश्र, ऑस्कर पुजोल, विद्या बिंदु सिंह, सुनील त्रिवेदी, दीपक करंजीकर, कविता द्विवेदी, शुभा शर्मा, के.के. श्रीवास्तव, भूमा वीरवल्ली एवं प्रदीप सौरभ ने अपने अपने वक्तव्य दिए।

परिसंवाद की मुख्य अतिथि प्रख्यात पंजाबी लेखिका अजीत कौर ने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि किताबें हमें हमेशा अच्छा मनुष्य बनने की प्रेरणा देती हैं। अगर स्टालिन और हिटलर ने भी अच्छी किताबें पढ़ी होतीं तो वह भी एक बेहतर मनुष्य बनते। उनका मानना था कि पुस्तकें पवित्र चीजें हैं और हमें उनका सम्मान करना चाहिए। किताबों ने ही हमारी आंतरिक विचारधारा का निर्माण किया है। सर्वोदय इंस्टीट्यूट के निदेशक और संस्कृत के विद्वान ऑस्कर पुजोल ने विश्व पुस्तक दिवस का प्राचीन इतिहास बताते हुए कहा कि स्पेन की राजधानी बार्सिलोना में इसको बहुत पहले मनाए जाने के उदाहरण हैं। उन्होंने बताया कि उन्हें सबसे ज्यादा प्रभावित भारतीय पुस्तक भगवत गीता ने किया है, जिसने उनकी जिंदगी बदल दी। इससे उनका दुनिया के प्रति नजरिया बदला। प्रख्यात लेखक एवं म.गां.अं.हिं.वि.वि. वर्धा के पूर्व कुलपति ने कहा कि पुस्तकें कब हमारी जिंदगी में शामिल हो जाती है हमें पता ही नहीं चलता, लेकिन वे हमारे जीवन को बदलने वाली होती हैं। उन्होंने शरतचंद्र, तुलसीदास, कालिदास, प्रेमचंद सहित आज के साहित्य का जिक्र करते हुए कहा कि कठिन परिस्थितियों में हमें इन लेखकों की पुस्तके ही रास्ता दिखाती हैं। आगे उन्होंने कहा कि हमें पुस्तकों के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए क्योंकि वे हमें सारे संसार से जोड़ती हैं।

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

प्रख्यात लोकसाहित्यविद विद्या बिंदु सिंह ने कहा कि हमारे जीवन में अच्छे दोस्त और अच्छी किताबों का महत्व सबसे ज्यादा होता है। हम उनके बीच आकर ही अपना दुख भूलते हैं और दूसरों का दुख जानते और महसूस करते हैं। मुझे ज्ञान की ज्योति पुस्तकों से ही प्राप्त हुई। उन्होंने ज्ञान को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के माध्यम के रूप में भी पुस्तकों की चर्चा की। प्रख्यात अभिनेता और लेखक दीपक करंजीकर ने कहा कि किताबें हर मोड़ पर हमें सिखाती हैं। माता पिता के बाद सबसे ज्यादा सहारा देने वाली यही होती हैं। उन्होंने किताबों को अपने स्वयं के लिए सच्चाई का आईना मानते हुए कहा कि यह हमारी सच्ची मार्गदर्शक होती हैं। साहित्यप्रेमी और महामहिम राष्ट्रपति के विशेष कार्याधिकारी सुनील त्रिवेदी ने कहा कि पुस्तकें जिंदगी को रोचक और विविधतापूर्ण तो बनाती ही हैं वे हमें भौगोलिक यात्राएँ भी कराती हैं। प्रख्यात ओड़िशी नृत्यांगना कविता द्विवेदी ने कहा कि पुस्तकें अपने भीतर संचित ज्ञान को दूसरे में बाँटने की प्रवृत्ति को भी प्रेरित करती हैं और यात्राओं की भी सच्ची साथी होती हैं। उन्होंने अपनी नृत्य यात्रा में ओड़िया साहित्य की प्रेरणा का भी उल्लेख किया। प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखिका शुभा शर्मा ने चिंता व्यक्त कि की नई पीढ़ी को पुस्तकों से कैसे जोड़ा जाए इस पर गहरे विचार विमर्श की जरूरत है। कवि और लेखक के.के. श्रीवास्तव ने कहा कि उनकी उन्नति में पुस्तकों की प्रत्येक पंक्ति का बहुत बड़ा हाथ है। कवि एवं अनुवादिका भूमा वीरवल्ली ने कहा कि गांधीजी की आत्मकथा ने जीवन में उनकी बहुत सहायता की है। किताबें ही सच्ची मित्र होती हैं और वह दुनिया के नए दरवाजे खोलती हैं। प्रख्यात हिंदी उपन्यासकार प्रदीप सौरभ ने बताया कि पुस्तकों को हम जब जब दोबारा पढ़ते हैं तो हमें विचारों के नए नए स्वरूप मिलते हैं। उन्होंने पुस्तक संस्कृति बचाए रखने के लिए लेखकों, पाठकों और अध्यापकों के साथ वर्कशॉप करने की सलाह भी दी।

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि किताबें हमारी विविधता की मुख्य प्रवक्ता होती हैं। कार्यक्रम के अंतिम सत्र की अध्यक्षता निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने की। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी में सम्पादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

के. श्रीनिवासराव